CASE STUDY

UNITED SECULAR SOCIETY

ENROLLMENT NO :-
19997606
NAME : AASHISH KUMAR
FATHER'S NAME : DHARAM PAL
COURSE NAME : B.Ed (2nd year)
SESSION : 2019-21
SHARDA COLLEGE OF
EDUCATIONAL
TECHNOLOGY

Scanned with CamScanner

CASE HISTORY ON CASE STUDY

व्यक्तिक अध्ययन (व्यक्ति इतिहास)

प्रस्तावना

व्यक्तिक अध्ययन :- एक विशेष प्रकार की विधि है। जिस के अंतर्गत एक विशेष इकाई से संबंधित विस्तृत एवं गहन अध्ययन हेतु तथ्यों का संकलन किया जाता है। न केवल द्वितीयक सामग्री बल्कि उसके अंतर्गत प्राथमिक एवं द्वितीयक स्त्रोतों से प्राप्त सूचनाओं के आधार पर निष्कर्ष प्रतिपादित किए जाते हैं। मनोविज्ञान, समाज शास्त्र तथा शिक्षा के अंतर्गत व्यक्तिगत अध्ययन का प्रयोग प्रारंभ से ही किया जाता है। सामाजिक व्यक्तिक अध्ययन प्रवृत्ति के क्षेत्र में व्यक्तिक अध्ययन का प्रयोग सर्वप्रथम "फ्रेडरिक लिले" ने सन 1852 ई॰ में पारिवारिक बजट के अध्ययन के रूप में किया था। तत्पश्चात "हर्बर्ट स्पेन्सर" ने विभिन्न संस्कृतियों का तुलनात्मक अध्ययन करने में इस प्रविधि का प्रयोग किया था। प्रमान शास्त्रियों Report Red field तथा ऑस्कर लेविस ने इस पद्धति की सहायता से कृषक संस्कृति तथा जनजाति संस्कृति का अध्ययन किया गया था। समाजशास्त्री अध्ययनों में व्यक्तिक अध्ययन किया और सर्वप्रथम प्रयोग अनेक सहयोगी ने की। Polland के किसानों का समाजशास्त्री अध्ययन करने का प्रयोग करके यह सिद्ध करे कि वस्तुनिष्ठ अध्ययन किया जा सकता है।

UNITED SECULAR SOCIETY

CLASSTIME

Scanned with CamScanner

व्यक्तिक अध्ययन पद्धति अर्थ

यह एक ऐसी पद्धति है जिसमें का अन्वेषण सामाजिक इकाई के जीवन की घटनाओं का अन्वेषण व विश्लेषण किया जाता है। यह परिवार, एक संस्था या समुदाय इत्यादि को लिया जाता है। विभिन्न विद्वानों ने इस प्रविधि को अनेक प्रकार से परिभाषित किया था।

ACC TO P.T. YOUNG, व्यक्तिक अध्ययन किसी एक सामाजिक इकाई के जीवन की खोज और विश्वास के विश्लेषण की पद्धति है। परिवार, संस्था, समूह या सम्पूर्ण समुदाय की है।

ACC TO CROW व्यक्तिक अध्ययन में उस व्यक्ति के आपातकालीन, इतिहास व उसका वर्तमान स्तर शामिल होता है जिसका प्रयोग विद्यार्थियों में गंभीर प्रवृत्ति वाली कमियों का समाधान करने तक सीमित रहता है।

व्यक्तिक अध्ययन पद्धति के उद्देश्य

* निदानात्मक उद्देश्य
* उपचारात्मक उद्देश्य
* शैक्षिक एवं मनोवैज्ञानिक समस्याओं संबंधित का अध्ययन करना
* अन्य सूचनाओं को जोड़ना

UNITED SECULAR SOCIETY
CLASSTIME
Scanned with CamScanner

व्यक्तिक अध्ययन की आधारभूत मान्यताएँ

व्यक्तिक अध्ययन एक ऐसी विधि है जिसके अंतर्गत एक या संपूर्ण इकाइयों का अध्ययन प्राप्त करना हेतु तथ्यों के आधार पर संपूर्ण की विशेषताओं को समझने का प्रयास किया जाता है। बाह्य रूप से यह प्रविधि त्रुटि पूर्ण है। यह प्रविधि मान्यताओं पर आधारित है, जिन्हें समझने के पश्चात इसकी मान्यता और महत्ता स्वतः स्पष्ट हो जाती है। ये मान्यताएँ निम्नलिखित हैं:-

* मानव व्यवहारों में मूलभूत समता

इस आधारभूत सिद्धांत पर आधारित है। कि बाह्य रूप से सभी व्यक्तियों में विभिन्न परिस्थितियों के कारण विभिन्नताओं के बावजूद मानव स्वभाव में ज्ञान प्राप्त करके सभी व्यक्तियों के व्यवहारों को आसानी से समझा जा सकता है।

* परिस्थितियों में समानता

प्रत्येक मानव व्यवहार विशेष परिस्थितियों से प्रभावित होता है। ये परिस्थितियाँ विभिन्न समय व स्थानों में लगभग ही प्राप्त होता है। उन परिस्थितियों में अन्य व्यक्ति के व्यवहार को समझा जा सकता है। जीवन का वास्तविक अध्ययन किया जा सकता था क्योंकि उन परिस्थियों में जब तक कुछ समय के बाद पुनः सरलता से उसमें प्रतिक्रिया से व्यवहार का अध्ययन किया जा सकता है।

UNITED SECULAR SOCIETY

CLASSTIME
Scanned with CamScanner

* संपूर्ण अध्ययन ही वास्तविक अध्ययन है

व्यक्तिक अध्ययन इस मान्यता पर आधारित है कि किसी इकाई का अध्ययन उसके कुछ पहलुओं के आधार पर नहीं किया जा सकता। इकाई का अध्ययन संपूर्ण रूप से होना चाहिए। तभी सर्वमान्य निष्कर्ष प्रस्तुत किया जा सकता है।

* समय तत्व

यह प्रविधि इस मान्यता पर आधारित है कि समस्त क्रियाओं एवं उसके व्यवहारों का समय तत्व का प्रभाव अवश्य ही पड़ता है।

* मानव व्यवहार का अवलोकन असंभव

इस अध्ययन की मान्यता यह है कि मानव व्यवहार इतना जटिल है कि अवलोकन द्वारा ही उसको सूचित ज्ञान प्राप्त करना संभव नहीं है।

व्यक्तिक अध्ययन की प्रक्रिया

व्यक्तिक अध्ययन किसी इकाई से संबंधित अथवा तत्वों का संकलन कर लेना मात्र ही नहीं है। वरण व्यक्तिगत सूचनाओं पर सैद्धान्तिक व्यावहारिक वातावरण में इस प्रकार ज्ञान प्राप्त करना है। विषय संबंधी, संरचना अथवा समूह ही मूलभूत आवश्यकताओं को समझना था। अथवा व्यक्तिगत अध्ययन हेतु एक व्यक्तिगत प्रक्रिया का प्रयोग किया जाना है। इस दृष्टि से वैज्ञानिक अध्ययन कुछ निम्नलिखित चरणों में प्रस्तुत है।

UNITED SECULAR SOCIETY

CLASSTIME

Scanned with CamScanner

* समस्या का चयन

व्यक्तिक अध्ययन की सफलता हेतु समस्या का चयन करना। आवश्यक होता है। इस चरण के अंतर्गत समस्या को परिभाषित किया जाता है। एवं समस्त पक्षों को स्पष्ट कर के सूचनाओं की रचना इत्यादि है।

* ईकाइयों का निर्धारण

समस्या के चयन के पश्चात यह निर्धारित करना आवश्यक है कि इस समस्या से संबंधित ईकाइयाँ कौन सी हैं।

* ईकाइयों की संख्या का निर्धारण

ईकाइयों को निर्धारण हेतु ईकाइयों की संख्या का निर्धारण करना आवश्यक हो जाता है। जिससे सभी तत्वों का संकलन किया जाता है। साथ ही इतनी अधिक भी न हो कि उसका अध्ययन संभव ही न हो।

* अध्ययन क्षेत्र का निर्धारण

अध्ययन करने हेतु आवश्यक करना अध्ययन कर्ता द्वारा उक्त क्षेत्र तथा स्थान का निर्धारण करना आवश्यक होता है। यहाँ विभिन्न ईकाइयों का अध्ययन किया जाता है। जैसे बाल अपराधी का किशोर गृह।

UNITED SECULAR SOCIETY

CLASSTIME

Scanned with CamScanner

* विश्लेषण का क्षेत्र

इस चरण के अंतर्गत यह निर्धारित किया जाना आवश्यक है कि अध्ययन की जाने वाली इकाईयों से संबंधित प्रमुख पक्ष कौन से हैं। जिससे अध्ययन करना है।

* घटनाओं के क्रम का वर्णन

इस अध्ययन पद्धति के अंतर्गत घटनाओं के क्रम का वर्णन आवश्यक है। कुछ विशेष घटनाओं या विशेषताओं किसी विशेष अंतर्गत किसी घटना ने किस प्रकार परिवर्तन किये या भविष्य में क्या होगा कि भविष्यवाणी की जाती है।

* निर्धारण तत्व

प्रत्येक तत्व घटना के क्रम निर्धारण तक आवश्यक होते हैं। अतः घटनाओं के क्रम को आवश्यकताओं अनुसार स्पष्ट करने के पश्चात अध्ययन करना हो किसी घटना की जानकारी लेना आवश्यक होता है।

* तथ्यों के संकलन की प्रक्रिया

इस पद्धति के अंतर्गत तथ्यों का संकलन करते समय निम्नलिखित बातों का अध्ययन करना चाहिए:

(i) प्रत्येक इकाई से वैज्ञानिक तथा मित्रतापूर्ण गुणों की स्थापना करना।

(ii) संबंधित व्यक्तियों के प्रति मुक्त सहयोग हेतु दूसरों से प्रेरित करना।

Scanned with CamScanner

(iii) अध्ययन ईकाई हेतु उपयोगी तत्वों का Record रखना।
(iv) अध्ययन ईकाई के मन में आनेवाले अपराधी भाव ज्ञात कर उन्हें निःसंकोच बोलने के लिए प्रोत्साहित करना।
(v) सार्थक व उपयोगी घटना एवं प्रभावों का अध्ययन करने हेतु।
(vi) ध्रुवीकरण व प्रक्षेपी प्रश्नों को पूछना।

* विश्लेषण का निष्कर्ष

इस अध्ययन पद्धति का अंतिम चरण है। इसके अंतर्गत प्राप्त तथ्यों का संकलन वर्गीकरण तथा विश्लेषण निम्नलिखित है:-
(i) ईकाई से संबंधित कार्य कारकों को ज्ञात करना।
(ii) उससे संबंधित कार्य कारकों को अतः संबंध की जाँच करना।
(iii) विभिन्न क्रय कारकों को ज्ञात करना।

इस अंतिम चरण से संकलित तथ्यों की विशिष्टता का ज्ञान प्राप्त किया जाना है। तत्पश्चात अध्ययन ईकाई से संबंधित मुख्य तथा गौण कार्यों को तर्क संगत उसके वर्गीकृत आधार द्वारा अध्ययन करने का प्रयास किया जाता है।

व्यक्तिगत अध्ययनों में सूचनाओं के स्त्रोत

अध्ययन के किसी प्रकार से किसी भी स्त्रोत से ईकाई संबंधित सूचनाओं प्राप्त इन सूचनाओं को दो वर्गों में बाँटा जा सकता है:-
(i) प्राथमिक स्त्रोत
(ii) द्वितीयक स्त्रोत

CLASSTIME
Scanned with CamScanner

(i) प्राथमिक स्त्रोत

व्यक्तिक अध्ययन में अध्ययन ईकाई से संबंधित सूचनाओं का संकलन करने में प्राथमिक स्त्रोतों की महत्वपूर्ण भूमिका है। प्राथमिक स्त्रोतो से प्राप्त सूचनाओं अत्यधिक गहन सूक्ष्म आंतरिक एवं वास्तविक होने के कारण विश्वसनीय होती है।

Acc to lonn प्राथमिक स्त्रोत वह है जो प्राथमिक स्त्रोत पर विभिन्न प्रकरण की सामग्री प्रदान करते हैं। लोगों द्वारा प्रस्तुत की गई है वह सामग्री का मौखिक रूप है।

(ii) द्वितीयक स्त्रोत

इस अध्ययन पद्धति में प्राथमिक स्त्रोत के साथ-साथ द्वितीयक स्त्रोत भी तथ्यों के संकलन में अति महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

Acc to Jung द्वितीय स्त्रोत ऐसे तथ्य प्रदान करने वाले स्त्रोत हैं जो किसी भी पूर्व स्तर पर होते हैं, तथा स्त्रोतों द्वारा आलेखित तथा संकलित होते हैं। तथा जिसका उपयोग करने वाले व्यक्ति उसके संकलन करने व्यक्ति से भी भिन्न होते हैं।

व्यक्तिक अध्ययन प्रकृति के प्रकार व्यक्तिक अध्ययन पद्धति में उन घटनाओं अवस्थाओं का अवलोकन किया जाता है जो वर्तमान तथा मूल में घटित होकर समाज जिसका ईकाई में परिवर्तन लाता है। व्यवहार मनोवैज्ञानिक ने व्यक्तिक अध्ययन के दो प्रमुख प्रकार बताये हैं:-

UNITED SECULAR SOCIETY
CLASSTIME
Scanned with CamScanner

व्यक्तिक अध्ययन पद्धति का महत्व

आज सामाजिक समस्याओं के सूक्ष्म एवं गहन अध्ययन में व्यक्तिक अध्ययन पद्धति का महत्वपूर्ण स्थान है। सामान्यत: देखा जाए तो अधिकतर अध्ययन के माध्यम से ही इनके उपयोगी व्यवहार किये जाते हैं।

कूले के अनुसार

व्यक्तिक अध्ययन पद्धति हमारे विधि ज्ञान को विकसित करती है और जीवन के स्पष्ट रूप से प्रभाव डालती है। व्यक्तिक अध्ययन पद्धति को निम्नलिखित बिंदुओं द्वारा स्पष्ट किया जाता है :

(i) **इकाइयों का गहन अध्ययन**

इस पद्धति में अध्ययन हेतु चयनित इकाई को सूक्ष्मतम एवं गहनतम रूप से अध्ययन किया जाता है।

(ii) **विरोधी इकाइयों का ज्ञान**

इस अध्ययन पद्धति के माध्यम से उन महत्वपूर्ण एवं अत्यंत उपयोगी तथ्यों का ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है। जिसका अत्यंत विधियों द्वारा प्राप्त करना असंभव है।

(iii) **वैध परिकल्पनाओं की रचना**

व्यक्तिक अध्ययन पद्धति से प्राप्त परीणामों के आधार पर भविष्य में उच्च एवं व्यक्तिक स्तर के माध्यम पर अध्ययन हेतु अत्यंत महत्वपूर्ण एवं उपयोगी सूचनाएँ उपलब्ध होती हैं।

UNITED SECULAR SOCIETY

Scanned with CamScanner

(iv) प्रारंभिक अध्ययन में सहायक

किसी भी व्यक्तिक अध्ययन की सफलता उसकी पूर्ण तैयारी पर निर्भर करती है। किसी भी अध्ययन के उपयोगी निष्कर्ष निकालने के संबंध में जानकारी प्रारंभ से ही अर्जित कर ली जाए, इसमें प्रतिदर्श चयन उपकरणों के चयन अथवा निर्माण में सहायता प्राप्त होती है।

(v) अभिवृत्तियों के अध्ययन में सहायक

अधिकांश सामाजिक पद्धति द्वारा अध्ययन गुणात्मक प्रकृति के होते हैं। गुणात्मक विशेष का अध्ययन करने हेतु व्यक्तिक अध्ययन पद्धति सबसे उपयुक्त सिद्ध होती है।

(vi) तुलनात्मक अध्ययन में सहायक

व्यक्तिक अध्ययन पद्धति अध्ययन इकाइयों से संबंधित तथ्यों का गहन एवं विस्तृत तुलनात्मक रूप से लिया जाता है। यह अध्ययन दीर्घकालीन के कारण तथ्यों का सत्यापन के औसत होते हैं।

व्यक्तिक अध्ययन पद्धति के दोष

लण्डबर्ग के अनुसार

व्यक्तिक अध्ययन पद्धति एवं पूर्वक स्वतंत्र एक वैज्ञानिक पद्धति कार्य प्रणाली को व्यवहारिक अध्ययन पद्धति के अवगुणों के कारण Bloomer इस पद्धति को न केवल अमनोवैज्ञानिक वाली पद्धति मानते हैं बल्कि अव्यवहारिक भी मानते हैं।

Acc. to Bloomer, व्यक्तिक अध्ययन पद्धति स्वतंत्र रूप से अवगुणों से अत्यधिक एवं अमनोवैज्ञानिक होने के कारण ही सिद्धांत के निर्माण में अव्यवहारिक है।

UNITED SECULAR SOCIETY
CLASSTIME
Scanned with CamScanner

इस पद्धति में निम्नलिखित दोष स्पष्ट दिये गये हैं:-

आत्मनिष्ठ अध्ययन

व्यक्तिक अध्ययन पद्धति में आत्मिनता अधिक रहती है। इससे अध्ययन पद्धति में प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। क्योंकि इसके अंतर्गत अनुसंधान कर्ता एवं अध्ययनकर्ता के मध्य घनिष्ठ संबंध एवं सौन्दर्य गुण वातावरण स्थापित हो जाता है।

प्रशिक्षित अध्ययनकर्ता का अभाव

व्यक्तिक अध्ययन पद्धति का स्वरूप अत्याधिक संवेदनशील होता है। इस पद्धति के द्वारा अध्ययन करने हेतु अनुसंधानकर्ता को प्रशिक्षित एवं वैज्ञानिक स्तर का होना होता है।

सूचनाओं की अविश्वसनीयता

इस अध्ययन पद्धति का एक प्रधान अवगुण यह है कि इसके द्वारा जो सूचनाएँ प्राप्त होती हैं वे हमेशा विश्वसनीय नहीं होती अक्सर माता-पिता व अन्य संबंधी।

अधिक श्रम या समय

इस विधी द्वारा किसी व्यक्ति का अध्ययन करने में साधनों से सूचना जमा की जाती है, कि उनमें काफी समय लगता है और बड़ी मेहनत करनी पड़ती है।

निरसता

इस विधी में निरसता का दोष पाया जाता है। व्यक्ति तथा उसके संबंधियों से इतने प्रश्न पूछे जाते हैं कि वे निरसता का अनुभव करने लगते हैं।

UNITED SECULAR SOCIETY

Scanned with CamScanner

माता के लिए

बालक के मैंने उसकी माता से कहा कि आर्थिक तंगी के कारण बच्चों को शिक्षा से वंचित न रखें। सरकार ने सर्व शिक्षा अभियान के तहत प्रत्येक बच्चों को 8वीं कक्षा तक निःशुल्क शिक्षा प्रदान की जाती है। अतः मैंने उन्हें सुझाव दिया कि आप अपने स्थानीय राजकीय विद्यालय में अपने बच्चों को दाखिल करायें।

दोस्ती के लिये

बालक ने दोस्ती को मैंने सुझाव दिया कि आप बालक की दोस्ती एक दूसरे की उत्साह बढ़ाने पढ़ने में सहयोग करे और जो दोस्त समुदाय परिवारों से है। वे उसी अपने दोस्त का आर्थिक सहयोग करें।

अध्यापकों के लिये

मैंने सहयोगी प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों से मिलकर सुझाव दिया कि जो बच्चे उन्हें पढ़ाई के लिए प्रोत्साहित करे तथा गरीबी के कारण उसका मनोबल न गिरने दे। एक सुझाव दिया कि वो छात्र का आत्मविश्वास बढ़ाये तथा गरीबी की समस्या को उसके उज्ज्वल भविष्य के आड़े न आने दें।

UNITED SECULAR SOCIETY

Scanned with CamScanner

निष्कर्ष

छात्र पर स्टडी करने के बाद यह निष्कर्ष निकलता है कि छात्र की ज्यादातर समस्या उसके परीवार की आर्थिक स्थिति से संबंधित है उसके माता पिता उसके शिक्षा संबंधी खर्च करने में असमर्थ है। जिससी व्यय से कभी विराम रहता है। छात्र के परीवार में कुल सदस्य 5 हैं और खर्च का भार उठाने वाले अकेले पिता हैं। फलस्वरूप उनका जीवन यापन बड़ी मुश्किल से हो पाता है। लेकिन सरकार की सर्व शिक्षा अभियान के तहत प्रत्येक मेधावी छात्र को विभिन्न प्रकार के आर्थिक प्रोत्साहन भी प्रदान किए जाते हैं। जिससे छात्र पढ़ लिख सके और आगे चलकर अपने माँ-बाप व परीवार का सहारा बन सके।

UNITED SECULAR SOCIETY

Scanned with CamScanner